मूल्य : एक प्रति 0.50 रु.
वार्षिक 5.00 रु.

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

उत्तर - साक्षरताकर्मियों के लिए

दिसंबर, 2008 वर्ष 13, अंक 12

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के नए कार्यालय नेहरू भवन का उद्घाटन

उद्घाटन अवसर पर बाएं से—ट्रस्ट की निदेशक, श्रीमती नुज़्हत हसन, श्रीमती मोहिनी राव, माननीय श्री अर्जुन सिंह, अध्यक्ष विपिन चंद्र, पत्रकार इंदर कुमार मल्होत्रा तथा भवन के डिजाइनर श्री कनविन्दे राय चौधरी

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के नए कार्यालय परिसर **नेहरू भवन** का उद्घाटन 12 दिसंबर, 2008 केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री माननीय श्री अर्जुन सिंह के द्वारा किया गया। मंत्री महोदय ने इस अवसर पर नेहरू भवन की उद्घाटन पट्टिका और ट्रस्ट के संस्थापक जवाहरलाल नेहरू के चित्र का अनावरण किया। इसके साथ ही उन्होंने ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती पुस्तकमाला के तहत विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित नौ साहित्यिक संचयनों और ब्रेल लिपि में प्रकाशित चार पुस्तकों का लोकार्पण भी किया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने अपने स्थापना के पचास वर्ष की अवधि में पुस्तक उद्योग जगत में एक विशिष्ट पहचान बनाई है और मुझे यह जानकर प्रसन्नता भी हुई कि ट्रस्ट युवाओं के पाठकीय विकास के लिए एक राष्ट्रीय कार्ययोजना तैयार कर रहा है, जो 15 से 25 आयु वर्ग के पाठकों की पठन रुचि पर केंद्रित होगी। युवा वर्ग हमारे देश की आबादी का सबसे बड़ा और सबसे ऊर्जावान समुदाय है। मुझे उम्मीद है कि शिक्षाविदों, बुद्धिजीवियों, अकादमियों, प्रकाशक समुदाय, युवा नेताओं एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं की सहायता से सार्थक और व्यापक कार्ययोजना बनेगी जो पाठकीय विकास पर ध्यान देगी।

कार्यक्रम की संचालिका एवं ट्रस्ट की निदेशिका, श्रीमती नुज़्हत हसन ने अंत में मंत्री महोदय, सभी विद्वतजनों, नेहरू भवन के डिजाइनर श्री कनविन्दे राय चौधरी एवं भवन के निर्माणकर्ता केंद्रीय लोक निर्माण विभाग तथा समारोह में उपस्थित बच्चों व ट्रस्ट के अधिकारियों-कर्मचारियों का धन्यवाद किया।

नेहरू भवन का उद्घाटन करते हुए माननीय श्री अर्जुन सिंह साथ में श्रीमती नुज़्हत हसन और प्रो. विपिन चंद्र

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह समारोह का उद्‌घाटन

''यह उत्सव पं. जवाहरलाल नेहरू को एक श्रद्धांजलि है जो नेशनल बुक ट्रस्ट के जनक थे और हमें उनके सपनों और मिशन को पूरा करना है,'' नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रो. विपिन चंद्र ने सप्ताह भर चलने वाले राष्ट्रीय पुस्तक समारोह का उद्‌घाटन करते हुए यह कहा। विदित हो कि नेशनल बुक ट्रस्ट के नेहरू भवन, वसंत कुंज, नई दिल्ली स्थित नए कार्यालय परिसर में 14 नवंबर, 2008 को उक्त समारोह का आयोजन हुआ। इस अवसर पर परिसर में पुस्तकों की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई।

उद्‌घाटन अवसर पर दाएं से—श्रीमती नुज़्हत हसन, प्रो. विपिन चंद्र, दीपा अग्रवाल, क्षमा शर्मा और जगदीश जोशी

प्रो. चंद्र ने अपने संबोधन में आगे कहा कि देश में पुस्तक पठन संस्कृति के निर्माण में नेहरू जी ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उनका जन्मदिन, जो बाल-दिवस के रूप में मनाया जाता है, हमें समाज में उनके विचारों के प्रसार का एक अवसर भी देता है। उन्होंने कहानियों के महत्व को भी रेखांकित करते हुए कहा कि ''कहानी हमारे साथ जीवनपर्यंत रहती हैं।'' उन्होंने यह भी कहा कि आधुनिक भारत पर, विशेष रूप से बच्चों के लिए, उन्होंने पुस्तकें लिखीं, ताकि उन्हें हमारे देश के वैभवशाली अतीत के बारे में जानकारी मिल सके।

विपिन चंद्र द्वारा पुस्तकालय-सह-प्रलेखन केंद्र के स्वचलीकरण केंद्र का उद्‌घाटन

सप्ताह भर चलने वाला यह उत्सव पूरे देश में मनाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत ट्रस्ट द्वारा पुस्तकों से जुड़े विभिन्न कार्यक्रम, संगोष्ठियां, कार्यशालाएं और पुस्तक प्रदर्शनियां, विशेष तौर पर बच्चों द्वारा, बच्चों के लिए आयोजित की जाएंगी। यह आयोजन आंध्र प्रदेश, ओड़ीसा, गुजरात, बिहार, कर्नाटक, पंजाब, प. बंगाल और उत्तर प्रदेश में हो रहे हैं। इस अवसर पर ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रो. विपिन चंद्र द्वारा पुस्तकालय-सह-प्रलेखन केंद्र के स्वचलीकरण केंद्र का उद्‌घाटन भी किया गया। यह केंद्र उपयोगकर्त्ताओं को भारत और विश्व भर की अच्छी और श्रेष्ठ पुस्तकों, संदर्भ सामग्रियों तथा पत्रिकाओं तक पहुंचने में सहयोग करेगा।

ट्रस्ट की निदेशक श्रीमती नुज़्हत हसन ने अतिथियों का स्वागत किया और जानकारी दी कि ट्रस्ट के कार्यालय परिसर *नेहरू भवन* में आज से आरंभ होने वाला यह उत्सव सप्ताह भर चलेगा। कथावाचन उत्सव यह विशेष रूप से 6-12 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए है। इस उत्सव में 47 स्कूल और विभिन्न स्वयंसेवी संगठन भाग ले रहे हैं। उन्होंने देश भर में ट्रस्ट द्वारा आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की भी जानकारी दी। उन्होंने कहा, ''कथावाचन हमारे विचारों को अभिव्यक्त करने का एक जरिया है और हमें विभिन्न गतिविधियों के आयोजन के द्वारा एक आनंददायी अवसर बनाना चाहिए।'' इस अवसर पर प्रख्यात लेखक, बुद्धिजीवी और स्कूली बच्चे बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

उद्‌घाटन-अवसर पर प्रख्यात चित्रकार श्री जगदीश जोशी तथा बाल लेखिकाएं—सुश्री दीपा अग्रवाल एवं श्रीमती क्षमा शर्मा ने भी अपने-अपने विचार रखे।

सुश्री दीपा अग्रवाल ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में पुस्तकों के प्रकाशन तथा उसके प्रोन्नयन हेतु नेशनल बुक ट्रस्ट को बधाई दी। उन्होंने कहा कि कहानी सुनाने के जरिए हम विश्व स्तर पर एक-दूसरे से जुड़ते हैं तथा एक-दूसरे की संस्कृति के बारे में जानते हैं। कहानियों के जरिए हम एक-दूसरे को अपने विचार भी बांटते हैं। कथावाचन के द्वारा बच्चों में भी कहानी सुनने की कला का विकास होता है।

बाल लेखिका व 'नंदन' पत्रिका की कार्यकारी संपादक श्रीमती क्षमा शर्मा ने नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा किए गए कार्यों की प्रशंसा की और कहा कि बच्चों में नई कहानियों को जानने के प्रति उत्सुकता होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि बच्चों की भावनात्मक अभिव्यक्तियां जैसे खुशी, उदासी, उनका अकेलापन--ये सभी किसी कथाकार को कहानी लिखने में सहायता करती हैं।

सिट ऐंड ड्रा प्रतियोगिता में भाग लेते स्कूली बच्चे

इस अवसर पर वरिष्ठ चित्रकार श्री जगदीश जोशी ने कहा कि एक चित्रकार किसी पुस्तक का अहम हिस्सा होता है और वह किसी पुस्तक की खूबसूरती के लिए महत्वपूर्ण होता है।

कार्यक्रम के समापन के अवसर पर ट्रस्ट के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के संपादक श्री मानस रंजन महापात्र ने धन्यवाद ज्ञापन किया। संचालन श्री द्विजेन्द्र कुमार ने किया।

पश्चिम बंगाल में आयोजित
नवसाक्षर कार्यशाला

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा प्रतिवर्ष 14 से 20 नवंबर को आयोजित होनेवाले 'राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह' के दौरान पश्चिम बंगाल, हुगली जिले के पोलबा-डडपुर खंड की सुगंधा ग्राम पंचायत में 20 नवंबर, 2008 को एक-दिवसीय नवसाक्षर कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला स्टेट रिसोर्स सेंटर फॉर एडल्ट एजुकेशन, बंगाल और हुगली के उपप्रभागीय कार्यालय के सहयोग से आयोजित की गई। इस अवसर पर स्टेट रिसोर्स सेंटर फॉर एडल्ट एजुकेशन के अधिकारी, श्री देवश्री मुखर्जी को क्षेत्र-परीक्षण के लिए प्रतिनियुक्त किया गया जिनके साथ श्री सौम्यजीत दास, उपप्रभागीय अधिकारी, हुगली, सदर, श्रीमती सूपर्णा मजुमदार, डब्ल्यू.बी.सी.एस. भी थे। इस कार्यशाला में प्रख्यात लेखक प्रीतम सेन गुप्ता, श्री अनंत बंधू चट्टोपाध्याय, श्री अशोक कुमार दास और डा. सुदर्शन सेन ने वयस्क ग्रामवासियों के समक्ष अपनी स्वरचित कहानी का पाठ किया। साथ में कुछ ग्रामवासियों ने भी अपनी स्वरचित कहानी का पाठ किया और लेखकों के साथ कहानी लेखन पर चर्चा की। कहानी लेखन की इस चर्चा में सभी ने उत्साहपूर्वक बढ़-चढ़कर अपने-अपने विचार रखे।

इस कार्यशाला में 10 पांडुलिपियों को तैयार किया गया, जिनमें से 9 पांडुलिपियों का प्रकाशन हेतु चयन हुआ। ये सभी पांडुलिपियां मुद्रित एवं साफ-सुथरी अवस्था में नवसाक्षरों, कम पढ़-लिखे और साक्षरों के समक्ष उनकी प्रतिक्रिया हेतु प्रस्तुत की गईं, जिनकी लगभग सभी कहानियां नवसाक्षरों को केंद्रित करके लिखी गई थीं। जैसे श्री सुदर्शन सेन शर्मा द्वारा लिखित कहानी 'ग्रामीण शिशु मेला इबन सुबोल' की कहानी मुख्यतः बच्चों के स्वास्थ्य संबंधी व कुपोषण के उपचार के तरीकों संबंधी जानकारी देती है।

ट्रस्ट द्वारा आयोजित इस एक-दिवसीय कार्यशाला में अनेक प्रतिष्ठित विद्वानों, लेखकों, चित्रकारों और पुस्तक प्रेमियों ने उत्साहजनक उपस्थिति दर्ज कराई।

32वां राष्ट्रीय पुस्तक मेला

बिहार सरकार के सहयोग से नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा आयोजित 32वें राष्ट्रीय पुस्तक मेले का शुभारंभ 8 नवंबर, 2008 को बिहार की राजधानी पटना में हुआ। स्थानीय गांधी मैदान में मेले का उद्घाटन करते हुए बिहार के मुख्य मंत्री श्री नीतिश कुमार ने कहा कि बिहार में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है। देश के विभिन्न संस्थानों एवं विभिन्न रोजगारों में उसने अपना परचम लहराया है। यहां के लोग पढ़ने के शौकीन हैं और यही कारण है कि अखबार, पत्रिका एवं पुस्तकों की सर्वाधिक बिक्री यहां हो रही है। श्री कुमार ने पुस्तक मेले के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य सरकार और स्थानीय जिला प्रशासन हर संभव मदद करेगा। उन्होंने आग्रह किया कि नेशनल बुक ट्रस्ट ने तीन बार राष्ट्रीय पुस्तक मेले का आयोजन कर यहां का वातावरण देख लिया है, उन्हें यहां अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पुस्तक मेले के आयोजन पर विचार करना चाहिए। श्री कुमार ने कहा कि राज्य में नई पुस्तकालय नीति बन गई है, जिससे राज्य के विभिन्न गांवों में मृतप्राय पुस्तकालय पुनर्जीवित हो सकेंगे।

इस अवसर पर प्रदेश के मानव संसाधन विकास मंत्री श्री हरि नारायण सिंह ने कहा कि यह महज संयोग है कि सरकार द्वारा आयोजित दो दिवसीय शिक्षा दिवस के मौके पर ही इस मेले का आयोजन हुआ है। दो दिनों बाद पूरे प्रदेश के छात्र और शिक्षक, शिक्षा दिवस के कार्यक्रम में शिरकत करने पटना आ रहे हैं। उन्होंने आशा जताई कि सरकार के निर्देशानुसार स्कूलों द्वारा इस मेले में अधिक से अधिक पुस्तकों की खरीद की जाएगी। छात्र भी पुस्तकों के इस विशाल भंडार में अपनी आवश्यकतानुसार पुस्तकों की खरीद सकेंगे।

इससे पूर्व आगत अतिथियों का स्वागत करते हुए नेशनल बुक ट्रस्ट की निदेशक श्रीमती नुज़हत हसन ने कहा कि बिहार बौद्धिक रूप से समृद्ध राज्य रहा है। यहां का पुस्तक प्रेम, प्रदेश की सांस्कृतिक और बौद्धिक संपन्नता का परिचायक है। यहां की जमीन बौद्धिक रूप से उर्वर है, ज्ञान के क्षेत्र में इस प्रदेश की एक अलग पहचान रही है। मेले में राज्य सरकार के सहयोग के लिए आभार व्यक्त करते हुए उन्होंने ट्रस्ट के कार्यों एवं गतिविधियों की चर्चा की। उन्होंने बताया कि इस मेले में देश भर के एक सौ पचास प्रकाशक, एक सौ पचहत्तर स्टॉलों पर पाठकों के लिए पुस्तकें उपलब्ध करवा रहे हैं।

मुख्य मंत्री का मेला परिसर में आगमन,
अगुवाई में ट्रस्ट की निदेशक श्रीमती नुज़्हत हसन

मानव संसाधन विकास विभाग के मुख्य सचिव श्री अंजनी कुमार सिन्हा ने मेले के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इससे प्रदेश के छात्रों को लाभ मिलेगा। उन्होंने बताया कि प्रदेश के विद्यालयों एवं शिक्षा समितियों को यह निर्देश दिया गया है कि अधिक से अधिक पुस्तकों की खरीद इस मेले में करें।

उद्घाटन समारोह में आगत अतिथियों का स्वागत ट्रस्ट की निदेशक श्रीमती नुज़्हत हसन ने पुस्तकों का उपहार देकर किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कमाल अहमद ने किया।

मेले के पहले ही दिन से बड़ी संख्या में पुस्तक प्रेमियों ने विभिन्न स्टॉलों पर पुस्तकों का अवलोकन और खरीदारी शुरू कर दी।

इलेक्ट्रिशियन के कामकाज

बिजली के कामकाज और स्वरोजगार

बेरोजगारी हमारे देश में एक गंभीर समस्या है। जनसंख्या बहुत अधिक है और नौकरियां कम हैं। ऐसे में सभी को नौकरी मिल पाना बहुत कठिन है। शहरी क्षेत्रों में बड़ी संख्या में युवक बेरोजगार हैं। पढ़ाई-लिखाई समाप्त करने के बाद ये युवक सरकारी नौकरी प्राप्त करना ही एकमात्र उद्देश्य समझते हैं। ऐसे कितने ही युवक हैं, जो पढ़ने-लिखने का व्यावहारिक ज्ञान रखते हैं, लेकिन उनके पास कोई प्रमाणपत्र नहीं है। वे भी काम की तलाश में इधर से उधर भटकते रहते हैं। यदि इन युवकों को विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण देकर स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया जाए, तो बेरोजगारी की बड़ी समस्या का काफी हद तक निदान हो सकता है।

आजकल बिजली का उपयोग जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है। खासकर शहरों में, घर-घर में कई तरह के कामों में बिजली प्रयोग में लाई जाती है। इस क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त युवकों के लिए स्वरोजगार की अपार संभावनाएं मौजूद हैं।

बिजली के कामकाज निम्नलिखित हैं :

1. बिजली की वायरिंग करना।
2. बिजली से चलने वाले उपकरणों की मरम्मत करना।
3. घरों में काम आने वाली बिजली से संबंधित सामान्य खराबियों को ठीक करना।
4. बिजली की सजावट का कार्य करना।
5. बैट्री चार्जिंग एवं उनको ठीक करना, तथा
6. बिजली के सामान की बिक्री करना आदि।

शहरों में बिजली और उससे चलने वाले उपकरणों के प्रयोग की अधिकता को देखते हुए इस काम को कम लागत पर भी शुरू किया जा सकता है। बिजली का काम रोचक होने के साथ-साथ खतरनाक भी है, इसलिए पूरी जानकारी होने पर ही काम शुरू करना चाहिए।

सुरक्षा संबंधी जानकारी एवं सावधानियां

1. बिजली का कार्य सावधानी से करें।
2. काम करते समय हाथों में रबर के दस्ताने पहनें।
3. दुकान में जहां काम करते हों, जमीन पर रबर की चटाई बिछाएं
4. बिजली के तार के नंगे जोड़ पर टेप अवश्य लगाएं।
5. कार्य करने से पहले उसे अच्छी तरह समझ लें।
6. आग लगने पर मेन स्विच बंद कर दें।
7. तारों में लगी आग पर पानी न डालें। रेत या अग्निशामक यंत्र का प्रयोग करें।
8. बिजली के यंत्र की मरम्मत करने से पहले उसे बिजली से अवश्य अलग करें।
9. मरम्मत करने से पहले मेन स्विच बंद कर दें।
10. बिजली का कार्य करते समय पैरों में जूते अवश्य पहनें।
11. बिना चेक किए किसी तार को न छुएं।

करंट लगने पर क्या करें?

यदि किसी को करंट लग जाए तो इस तरह व्यवहार करें :

1. मेन स्विच तुरंत बंद कर दें।
2. पीड़ित व्यक्ति को खुले स्थान पर लिटाएं, जहां आसानी से हवा मिल सके।
3. यदि पीड़ित व्यक्ति के शरीर का कोई भाग फ्रैक्चर हुआ है, तो उसे सावधानी से उठाएं।
4. पीड़ित व्यक्ति को सांस लेने में दिक्कत हो रही हो तो कृत्रिम सांस दें, यानी उसके मुंह में अपने मुंह से सांस दें। ऐसा एक मिनट में दस या बारह बार करें और तब तक दोहराते रहें, जब तक पीड़ित व्यक्ति की सांस सामान्य न हो जाए।
5. हालत ज्यादा खराब हो तो तुरंत अस्पताल ले जाएं।

*ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तक **'इलेक्ट्रिशियन के कामकाज'** का अंश*

पाठकीय प्रतिक्रिया

- 'साक्षरता संवाद' नियमित प्राप्त हो रहा है। पुस्तकों से समाज को जोड़े रखने में साक्षरता संवाद व नेशनल बुक ट्रस्ट अहम भूमिका निभा रहे हैं। कृपया एनबीटी द्वारा भविष्य में विभिन्न स्थानों पर लगाई जाने वाली पुस्तक प्रदर्शनी की तिथि व स्थान आदि का विवरण भी दें, ताकि ज्यादा से ज्यादा पुस्तक प्रेमी लाभान्वित हो सके।

  सन्दीप कपूर, अंबाला सिटी (हरियाणा)

- आपके यशस्वी संपादन में प्रकाश्यमान मासिक 'साक्षरता संवाद' का सितंबर, 2008 अंक मिला। इसके पूर्व भी अंक मिलते रहे हैं। हार्दिक धन्यवाद। 'साक्षरता संवाद' के माध्यम से आप शिक्षा एवं साहित्य के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान कर रहे हैं। नव-नव सृजन एवं साहित्य से अवगत कराता प्रत्येक अंक पठनीय एवं उपयोगी होता है। इस महत् सत्कार्य हेतु शतशः साधुवाद।

  भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश', उन्नाव (उ.प्र.)

- गांधी जयंती के शुभ अवसर पर 'साक्षरता संवाद' अक्तूबर, 2008 प्रकाशित कर गांधीजी के प्रति आपने सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की है। सुभद्रा कुमारी चौहान की 'सेनानी का स्वागत' शीर्षक कविता और उन्हीं की रचना 'गुलाब सिंह' प्रकाशित कर सचमुच उनके प्रति सम्मान प्रकट किया है। व्यंजन के अंतर्गत आपने अपने पाठकों को बड़ियां बनाने की विधि से अवगत कराया, यह एक अच्छी शुरुआत है। कुल मिलाकर नेशनल बुक ट्रस्ट ने साक्षरता संवाद प्रकाशित कर सभी प्रकार के पाठकों के प्रति उपकार किया है। इस उदारतापूर्ण कार्य के लिए कृपया मंगल कामनाएं स्वीकारें।

  दानबहादुर सिंह, पड़रा, रीवा-486001

नव वर्ष स्वागतम्

लक्ष्मी विमल

स्वागतम्, स्वागतम्
नव वर्ष स्वागतम्।

नभ से नवल किरण
धरती को करे नमन
दृश्य ये मनोहरम्
नव वर्ष स्वागतम्।

शहर-शहर हर्ष है
गांवों में उत्कर्ष है
गली गीत मंगलम्
नव वर्ष स्वागतम्।

कली-कली हंसी-खुशी
प्राणवायु महक उठी
नव संचार जीवनम्
नव वर्ष स्वागतम्।

लूट मार आगजनी
लहू-लहू धरा सनी
व्यथा कथा मिटे सभी
नव वर्ष स्वागतम्।

ट्रस्ट की ओर से साक्षरता संवाद के पाठकों को नववर्ष 2009 की मंगलकामनाएं!

कृतज्ञ जानवर और कृतघ्न आदमी

(कुमाऊनी लोक कथा)

एक बार एक भला आदमी जंगल से होकर कहीं जा रहा था। प्यास लगने पर वह एक कुएं पर रुका। यह कुआं काफी अरसे से काम में नहीं आ रहा था। कुएं में झांकने पर उसे कुछ आवाजें सुनाई दीं। एक शेर, एक सांप, एक नाई और एक सुनार उसमें गिर गए थे। शेर ने कहा, ''दया करके मुझे बाहर निकालो! तुम्हारा यह उपकार मैं कभी नहीं भूलूंगा।''

भले आदमी ने कहा, ''शेर के नाम से ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। बाहर निकलते ही तुम मुझे खा जाओगे। निश्चय ही तुम्हें भूख लगी होगी।''

शेर ने कहा, ''मैं वचन देता हूं कि तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा। मेहरबानी करके मेरी मदद करो!''

भले आदमी ने एक मजबूत बेल उखाड़ी और उसकी सहायता से शेर को बाहर निकाल दिया। शेर ने कहा, ''कभी मुझसे मिलने आना। मैं इसी जंगल में रहता हूं। मैं तुम्हें कुछ देना चाहता हूं। जाने से पहले तुम्हें छोटी-सी सलाह देता हूं। कुएं में जो आदमी हैं, उन्हें न निकालना। दोनों दुष्ट हैं।''

उसके बाद सांप ने उससे बाहर निकालने की विनती की। भले आदमी ने कहा कि उसे सांप से बहुत डर लगता है। सांप ने उससे वादा किया कि वह उसका अहित नहीं करेगा। उसने सांप को भी बाहर निकाल दिया। जाने से पहले सांप ने उससे कहा कि जरूरत पड़े, तो वह उसे अवश्य याद करे। सांप ने भी उसे सचेत किया कि वह नाई और सुनार की मदद न करे।

लेकिन जब नाई और सुनार ने उससे, उन्हें बाहर निकालने की याचना की तो वह पसीज गया। सोचा, 'आखिर वे भी मेरी तरह आदमी हैं।' और उन्हें भी कुएं से बाहर निकाल दिया। उन्होंने भले आदमी को बार-बार धन्यवाद दिया और शहर में उनसे मिलने आने को कहा। उसके उपकार के लिए उन्होंने उसे कुछ देने का वचन दिया।

यात्रा से लौटते समय भला आदमी फिर उस जंगल से गुजरा। वहां उसे वह शेर मिला। उसे देखकर शेर बहुत खुश हुआ, उसकी खूब खातिरदारी की और विदाई की वेला में उसे हीरे की अंगूठी भेंट में दी।

फिर वह आदमी नाई और सुनार से मिलने शहर गया। वे उससे बहुत अच्छी तरह से मिले, उसकी आवभगत की, पर जब उसने उन्हें हीरे की अंगूठी दिखाई तो उन्होंने चुपके से राजा को इसकी सूचना दे दी। वहां की राजकुमारी को शेर ने जंगल में मार डाला था। राजा ने पूरे राज्य में मुनादी करवाई थी कि जो कोई राजकुमारी की मौत का सुराग देगा या उसका कोई गहना लाकर देगा उसे इनाम दिया जाएगा। उस भले आदमी को मालूम नहीं था कि वह अंगूठी राजकुमारी की है।

नाई वहां का कोतवाल था। उसने भले आदमी को जेल में डाल दिया और उसे बहुत मारा। बेचारे ने बहुत कहा कि वह बेकसूर है। यह अंगूठी उसे एक शेर ने उपहार में दी है। पर ऐसी बात पर कौन विश्वास करता? राजा ने सोचा कि उसी ने राजकुमारी को मारा है। वर्ना उसके पास अंगूठी कहां से आती? राजा ने उसका सर कलम करने का आदेश दिया।

कारागार में बंद, निराश भले आदमी को उस सांप का खयाल आया। आन की आन में सांप प्रकट हो गया। बोला, ''कहो, मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं?'' भले आदमी ने उसे आपबीती कह सुनाई। सांप ने कहा, ''मैंने तुमसे कहा था कि दुष्टों को कुएं से मत निकालना। खैर, जो हुआ सो हुआ, इस मुसीबत में मैं तुम्हारी मदद करूंगा, जैसे तुमने मेरी मदद की थी। मैं रानी को डसने जा रहा हूं। तुम राजा को कहलवाना कि तुम उसका इलाज कर सकते हो। बाकी मैं संभाल लूंगा।''

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4078/06-08
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2006-08
Mailing date 25/26

रात को जहरीले सांप के काटने से रानी बेहोश हो गई। तमाम वैद्य, हकीम और ओझा-गुनी बुलवाए गए, पर रानी की बेहोशी कम नहीं हुई। सबको लगा कि उसका आखिरी वक्त आ गया है।

अगले दिन जब भले आदमी को मृत्युदंड देने का समय आया तो उसने अपनी अंतिम इच्छा दरसाई कि वह रानी का उपचार करना चाहता है। उसे अविलंब बुलाया गया। उसके रानी के कक्ष में पहुंचते ही उसका मित्र सांप आया और घाव पर मुंह रखकर अपना विष चूस लिया। रानी स्वस्थ हो गई।

राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसका आभार माना। पर उसका क्रोध अब भी पूरी तरह शांत नहीं हुआ था, क्योंकि उसके विचार से उसी ने राजकुमारी की हत्या की थी। भले आदमी ने उसे सारी बात विस्तार से बताई। उसने नाई और सुनार को गवाही के लिए बुलाया कि कैसे उसने उन्हें और सांप, शेर को कुएं से निकाला था। पर नाई और सुनार ने कहा कि उन्होंने इस आदमी को पहले कभी नहीं देखा। निराश भले आदमी ने सोचा कि काश, शेर यहां आता और उसकी बात की पुष्टि करता! इसके यह सोचते ही शेर शहर में आ गया। उसके साथ शेरों का बहुत बड़ा झुंड था। उसकी राजसी दहाड़ों से पूरा शहर थर्रा गया। आश्चर्य और भय से सब जड़ हो गए। राजा को विश्वास हो गया कि भला आदमी सच कह रहा है। और लो, अगले ही पल शेर अलोप हो गए।

नाई और सुनार बहुत रोए, गिड़गिड़ाए, पर राजा ने उनकी एक न सुनी। भले आदमी के स्थान पर उनके सर धड़ से अलग कर दिए गए।

धूप

केदारनाथ अग्रवाल

धूप चमकती है चांदी की साड़ी पहने
मैके में आई बेटी की तरह मगन है
फूली सरसों की छाती से लिपट गई है
जैसे दो हमजोली सखियां गले मिली हैं
भैया की बाहों से छूटी भौजाई-सी
लहंगे को लहराती लचती हवा चली है
सारंगी बजती है खेतों की गोदी में
दल के दल पक्षी उड़ते हैं मीठे स्वर के
अनावरण यह प्राकृत छवि की अमर भारती
रंग-बिरंगी पंखुरियों की खोल चेतना
सौरभ से मह-मह महकाती है दिगंत को
मानव मन को भर देती है दिव्य दीप्ति से
शिव के नंदी-सा नदिया में पानी पाती
निर्मल नभ अवनी के ऊपर बिसुध खड़ा है
काल काग की तरह ठूंठ पर गुमसुम बैठा
खोई आंखों देख रहा है दिवास्वप्न को।

'फूल नहीं, रंग बोलते हैं' कविता-संग्रह से

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
और उसकी गतिविधियों तथा प्रकाशनों के बारे में
विस्तृत जानकारी के लिए अवलोकन करें :
वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : देवशंकर नवीन
संपादकीय सहयोग : कमलेश कुमारी
उत्पादन सहयोग : प्रवीण कुमार कपिल

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से श्रीमती नुज़्हत हसन द्वारा एस.एस. इंटरप्राईजेस, प्रथम तल, 10/8020 मुलतानी ढांढ़ा, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55 से टाईपसेट तथा अरावली प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, डब्ल्यू-30, ओखला फेज II, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित एवं ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110016 से प्रकाशित।